

भारत सरकार
रेल मंत्रालय

लोक सभा
07.08.2024 के
अतारांकित प्रश्न सं. 2556 का उत्तर

रेलगाड़ियों की टक्कर से हाथियों की अप्राकृतिक मृत्यु

2556. श्री विनोद लखमशी चावड़ा:

क्या रेल मंत्री यह बताने की कृपा करेंगे कि:

- (क) क्या सरकार इस तथ्य से अवगत है कि रेलगाड़ियों की टक्कर हाथियों की अप्राकृतिक मृत्यु का दूसरा सबसे बड़ा कारण है;
- (ख) यदि हां, तो क्या सरकार ने हाथी गलियारों में गति प्रतिबंध और एआई निगरानी और सेंसर जैसी प्रौद्योगिकियों के उपयोग संबंधी कदम उठाए हैं;
- (ग) क्या सरकार द्वारा शुरू की गई 'गजराज सुरक्षा' (घुसपैठ का पता लगाने वाली प्रणाली) रेलगाड़ी-हाथी टकराव को रोकने में सफल रही है;
- (घ) यदि हां, तो तत्संबंधी ब्यौरा क्या है; और
- (ङ) यदि नहीं, तो इसके क्या कारण हैं?

उत्तर

रेल, सूचना और प्रसारण एवं इलेक्ट्रॉनिकी और सूचना प्रौद्योगिकी मंत्री

(श्री अश्विनी वैष्णव)

(क) से (ङ): विवरण सभा पटल पर रख दिया गया है।

रेलगाड़ियों की टक्कर से हाथियों की अप्राकृतिक मृत्यु के संबंध में दिनांक 07.08.2024 को लोक सभा में श्री विनोद लखमशी चावड़ा के अतारांकित प्रश्न सं. 2556 के भाग (क) से (ड) के उत्तर से संबंधित विवरण।

(क) से (ड) भारतीय रेल ने वन विभाग के साथ गहन समन्वय से विभिन्न उपाय किए हैं, ताकि रेलगाड़ी परिचालन के दौरान जंगली जानवरों को कोई नुकसान न हो। इन उपायों में पशु कॉरिडोर के चिह्नित स्थलों पर उपयुक्त गति प्रतिबंध लगाना, गाड़ी कर्मदल और स्टेशन मास्टर की सतर्कता और जागरूकता के लिए अद्यतन सूचना प्रदान करने और संवेदनशील बनाने हेतु संबंधित वन अधिकारियों के साथ नियमित बैठकें करना, रेलवे भूमि के भीतर रेलपथ के आस-पास की वनस्पति और खाद्य पदार्थों को हटाना आदि शामिल हैं। वन विभाग द्वारा हाथी ट्रैकर्स भी स्थापित/लगाए जाते हैं, जो लोको पायलटों को आगे सूचित करने के लिए स्टेशन मास्टर को समय पर सचेत करते हैं।

चिह्नित स्थानों पर हाथियों के आवागमन के लिए अंडरपास और रैंप का निर्माण, रेलपथ के साथ बाड़ का प्रावधान आदि जैसे अन्य उपाय किए गए हैं। एलीफेंट कॉरिडोर में क्रॉसिंग स्थानों पर नवोन्मेषी हनी बी बजर डिवाइस लगाए गए हैं ताकि रेलपथ के आस-पास जंगली जानवरों/हाथियों के आवागमन को रोका जा सके। यह डिवाइस हाथियों को रेलपथ से दूर भगाने का कार्य करता है और 96 ऐसे हनी बी बजर पूर्वोत्तर सीमांत रेलवे के विभिन्न स्थानों में परिचालन में है। रात्रि/कम दृश्यता के दौरान सीधे रेलपथ पर जंगली जानवरों की मौजूदगी का पता लगाने के लिए थर्मल विजन कैमरा भी विकसित किया गया है, जो जंगली जानवरों की मौजूदगी के बारे में लोको पायलटों को सचेत करता है। हाथियों के प्रवेश को रोकने के लिए रेलपथ के पास वन्य क्षेत्र में सौर प्रणाली वाली एलईडी लाइटें भी लगाई जाती हैं।

भारतीय रेल ने चिह्नित कॉरिडोर स्थानों पर रेलपथ पर या आस-पास हाथियों/जंगली जानवरों की उपस्थिति का पता लगाने के लिए ऑप्टिकल फाइबर केबल आधारित वितरित ध्वनिक सेंसर (डीएएस) जिसे एआई सक्षम घुसपैठ संसूचन प्रणाली (आईडीएस) के रूप में भी जाना जाता है, की स्थापना के लिए कार्य शुरू कर दिया है। यह प्रणाली हाथियों/जंगली जानवरों के आवागमन के संबंध में अग्रिम सूचना प्राप्त करने में मदद करती है ताकि समय पर कार्रवाई की जा सके और लोको पायलटों, स्टेशन मास्टर और नियंत्रण कक्ष को चेतावनी

संप्रेषित की जा सके। घुसपैठ संसूचक प्रणाली (आईडीएस) का विकास और प्रभावोत्पादकता सतत् प्रक्रिया है और आरडीएसओ इसकी कार्यप्रणाली एवं विश्वसनीयता में और सुधार लाने के लिए कार्य कर रहा है।

अब तक, उपरोक्त प्रणाली पूर्वोत्तर सीमा रेलवे के 54 मार्ग किलोमीटर लंबाई में स्थापित किया गया है। इसके अलावा, 208 करोड़ रुपए की लागत पर विभिन्न क्षेत्रीय रेलों में इस प्रणाली की स्थापना हेतु कार्य स्वीकृत किया गया है।
